अक्षर

tectum
porticus
sedilia
orchestra
mimorum
ædes
ingressus
proscænium

अन्धार

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप की पत्रिका

सम्पादक
प्रियंवद

उप सम्पादक
जीवेश प्रभाकर

वर्ष-15 अंक 44
अप्रैल 2016-जुलाई 2016

यह अंक हमारी वेबसाइट
www.sangamankar.com
पर उपलब्ध है ।

एक प्रति	- 50 /- रु.
वार्षिक सदस्यता	- 150/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता	- 200/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता	- 400/- र
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 1500/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता	- 2000/- रु.

पत्रिका रजिस्टर्ड डाक अथवा कूरियर से मंगाने के लिये वार्षिक सदस्य कृपया 100/- रुपये (तीन अंक) और जोड़ लें ।

प्रकाशक

अकार प्रकाशन, 15/269, सिविल लाइन्स, कानपुर - 208 001

ई मेल - akarprakashan@gmail.com

सम्पर्क

प्रियंवद

15/269, सिविल लाईन्स, कानपुर - 208 001

फोन न. : 0512-2305561 (नि.) (मो.) 09839215236

ई मेल - priyamvadd@gmail.com

जीवेश प्रभाकर :

69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)

ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574

आवरण :- जीवेश प्रभाकर :

मुद्रक

सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023

कम्पोज़िंग

विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर -492 001

सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं । 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं । आपको 'अकार' के खाते में राशि जमा कराने के लिये शुरू के चार ब्यौरों की जरूरत पड़ेगी। नेट द्वारा जमा कराने पर शेष दो ब्यौरे भी काम आएगें ।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

अनुक्रम

1. **संपादकीय** -प्रियंवद 4

2. **व्याख्यान :**

इंतज़ार हुसैन : एक कालजयी व्यक्तित्व - शमीम हनफ़ी 6

3. **लेख :**

शिक्षा के बिना विकास का मतलब - गिरिराज किशोर 22

4. **संवाद :**

प्रोफेसर काज़ी अफज़ाल हुसैन से बातचीत - ख़ान अहमद फ़ारुक़ 26

5. **कहानी :**

गोधूलि – प्रियंवद 37

6. **लेख –**

आधुनिक मराठी कविता में प्रतिरोध - प्रफुल्ल शिलेदार 55

7. **संस्मरण** -

डॉ. शम्भुनाथ सिंह के साथ नवगीत की एक शाम - ज़हीर कुरेशी 66

8. **कविताएं –**

अनूप सेठी 70

पारूल पुखराज 73

9. **समीक्षा** -

सर्जनात्मक चुनौती से गुज़रते - नंद किशोर आचार्य 76

10. **प्रसंग /अप्रसंग :**

1. अकार-42 : प्रतिक्रिया-1 - अनवर सुहैल 81

2. अकार-42 : प्रतिक्रिया-2 - कुशेश्वर 84

3. संगमन-21 : कुछ यादें-1 - कमलेश यादव 89

4. संगमन-21 : कुछ यादें-2 - रजनी पंडेल 94

5. संगमन-21 : कुछ यादें-3 - राकेश विश्वकर्मा 96

यह अंक

8 जुलाई को गिरिराज जी 80 वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं । लगभग 60 वर्षों का स्वस्थ, सक्रिय, ऊर्जा से भरा रचनात्मक जीवन, किसी भी लेखक के लिए स्पृहा और ईर्ष्या का विषय होगा। ईर्ष्या इसलिए, कि अब सामान्यतः साठ के आसपास ही अधिकांश लेखक लड़खड़ाने लगते हैं । लगभग प्रत्येक दिशा में प्रत्येक स्तर पर। इसके विरुद्ध इसी वर्ष कस्तूरबा गाँधी पर प्रकाशित गिरिराज जी का नवीनतम उपन्यास 'बा' स्वयं में उनकी रचनात्मक सक्रियता व संलग्नता का पुख्ता प्रमाण है । अब भी नियमित रूप से वह लगभग तीन घंटे रोज लेखन को देते हैं । अभी कई और बसन्त और देखेगें भी । जाहिर है, हम सब भी उनकी कई कृतियों से लभान्वित होंगे । 'अकार' के जन्म की गाथा भी गिरिराज जी से जुड़ी है । आज भी वह 'अकार' के प्रति सबसे अधिक संलग्नता, सरोकार और स्नेह रखते हैं । हम सबकी तरफ से, 'अकार' से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति की तरफ से गिरिराज जी को 80 वर्ष में प्रवेश करने की हार्दिक बधाई व अगले एक दशक के यथावत बीतने की मंगल कामनाएँ ।

'पहला गिरमिटिया' के बाद 'बा' उपन्यास गाँधी और कस्तूरबा के जीवन के बहुत से उन जटिल, अंतरग व रिक्त स्थानों को भरता है जो औपन्यासिक कलेवर की सीमाओं के कारण, 'पहला गिरमिटया' में बचे रहे गए थे । कस्तूरबा गाँधी का जीवन व राजनीतिक भूमिका लगभग अज्ञात सी है । जैसा कि हस्बेमामूल, हिन्दी में होता आया है, अध्यापकीय कूपमंडूकता, नारसिसस की आत्ममुग्धता और उत्सवधर्मी सीमाओं के कोलाहल में घिरे हिन्दी रचना जगत में साहित्येतर विषयों पर एक गहरा शून्य है, और किसी भी विषय के गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए अंग्रेजी की शरण में जाना ही पड़ता है, इसलिए कस्तूरबा गाँधी के साथ भी यही है। अधिकांश सामग्री अंग्रेजी पुस्तकों में ही मिली है । गाँधी के जीवन के अलावा भी, देश के स्वतंत्रता संघर्ष, जनान्दोलन व राजनीति में उनकी भूमिका के बारे में, सामान्यतः हिन्दी पाठक नहीं जानते । यह उपन्यास इस दृष्टि से भी अतिरिक्त महत्व रखता है, कि यह कस्तूरबा के साथ गाँधी के जीवन के भी, उन अनेक अंतरंग या मनोवैज्ञानिक पक्षों को रोशनी में लाता है, जो उनके मानसिक द्वन्द्व को निरन्तर बनाए रखते हुए, उनके व्यक्तित्व के अनेक पक्षों को उद्घाटित करते हैं ।

अकार 44

'अकार' को सैदव ही नंद किशोर जी का स्नेह प्राप्त हुआ है । बावजूद आँख के ऑपरेशन के, डॉक्टर की अनुमति मिलते ही, उन्होंने पहला काम इस उपन्यास की समीक्षा लिखने का किया। हम सब उनके आभारी हैं । इतने महत्वपूर्ण व इतने वरिष्ठ लेखक के इस उपन्यास में प्रूफ की इतनी अधिक अशुद्धियां, राजकमल प्रकाशन की साख कम करती हैं। मुखपृष्ठ पर ही 'प्रमाणिक' लिखा है।

यह शेक्सपीयर की 400 वीं पुण्य तिथि का वर्ष है । संभव है हम हिन्दी में इस बात को महसूस न कर सकें, कि विश्व पर शेक्सपीयर ने क्या प्रभाव डाला है और क्यों इतने वर्षों तक, अनेक विवादों के बाद भी, वह असंख्य लोगों की लगभग श्रद्धा जैसी चीज का पात्र बना हुआ है । इस अंक में हम कवर व अन्य पृष्ठों पर शेक्सपीयर के चित्रों को दे रहे हैं । अगले अंक में हम कुछ सामग्री देने का प्रयास करेगें ।

यह डॉ. शम्भुनाथ सिंह का जन्मशती वर्ष भी है । गीतों की दुनियों में डॉ. शम्भुनाथ को बहुत सम्मान और स्नेह से याद किया जाता है । ज़हीर कुरेशी का यह संस्मरण नवगीत और हिन्दी कविता के बीच चले आ रहे विवाद व द्वन्द्व को सामने रखता है । हिन्दी साहित्य की आलोचना व इतिहास में गीत के महत्व को अस्वीकार किया जाना लगभग आत्महंता कदम है । हिन्दी कविता की सिमटती दुनिया और इसे अस्वीकार किए जाने की आहट हिन्दी कवि न सुनें, और इसका कारण तलाशने की कोशिश न करें, यह उनकी इच्छा व अधिकार है वर्ना 'तार सप्तक' के प्रकाशन, उसकी भूमिका व उपलब्धि पर पुनर्विचार व उसका पुनर्मूल्यांकन करने में कोई कठिनाई भी नहीं होनी चाहिए ।

अंत में सबसे ज़रूरी बात। 'अकार' का यह अंक 96 पृष्ठों का है । आर्थिक कारणों से हमें इस अंक के पृष्ठ कम करने पड़े । हमें उम्मीद है, अगले अंकों में हम पृष्ठ संख्या बढ़ाने में समर्थ होंगे । 'अकार' ने हमेशा स्वयं को लघु पत्रिका माना है और उसी भूमिका में रहते हुए यह भी माना है कि संघर्ष इसकी स्थायी नियति है । सिद्धान्त और नीति के स्तर पर हमने राजनैतिक दलों व व्यक्तियों के प्रचार वाले विज्ञापन नहीं छापे । 'अकार' के पाठकों, लेखकों व शुभचिन्तकों के सहयोग के साथ हम 'अकार'निकालते रहेंगे, हमें पूरा विश्वास है।

प्रोफ़ेसर शमीम हनफ़ी

इंतज़ार हुसैन : एक कालजयी व्यक्तित्व

जहाँ बहुत सी चिड़िया हों और बहुत सी बड़ी लड़कियाँ भी हों, और आवाज न आ रही हो, तो बड़ी अद्भुत बात मालूम होती है। लेकिन फिर भी, मेरी इच्छा है कि आप ध्यान से सुनें कि जिस व्यक्ति की बातें मैं करने जा रहा हूँ, वह हमारे समय के सबसे संवेदनशील इन्सानों में से एक है और इसलिए मेरी इच्छा है कि आप भी मेरी बातें सुनें। अब से लगभग साठ साल पहले, जब मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्र था, तो उस समय नुशूर साहब के एक मुशायरे में नूह नारवी साहब तशरीफ़ लाए थे और उनका एक क़लाम सुना था रेडियो पर। उस समय टीवी वुजूद में नहीं आया था । वह क़लाम था-

मुशायरे में जो अहले शऊर आए हैं
वे सब के सब ब खयाले नुशूर आए हैं
है शोर आज मुस्लिम हलीम कॉलेज में
कि नूह बहते हुए कानपूर आए हैं

मैं बहता हुआ तो नहीं आया, बहरहाल कहना चाहिए कि पहिए की मदद से आप तक पहुँचा हूँ । यह बहुत ही अजीब शहर है । अब तो इस शहर की प्रतिष्ठा सभी तरफ है। इसी शहर ने मुंशी दया नारायण निगम को जन्म दिया। मुंशी साहब हमारी उस तहज़ीब की यादगार हैं जो इस समय खतरे की चपेट में है यानी हमारी साझा विरासत । उनके दोस्तों में एक तो प्रेमचंद थे, और मुंशी साहब के एक और दोस्त थे फिराक़ साहब, मेरे शिक्षक भी रहे हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पढ़ाई खत्म करने के बाद फिराक़ साहब ने कुछ दिनों तक कानपुर में पढ़ाया है । आगरा विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. किया था और कानपुर में मुलाज़िम हो गए थे । तो इस तरह कानपुर हमारी सामूहिक चेतना का एक प्रमुख केंद्र है और खूबी की बात यह है कि यहां 'जमाना', जैसा कहना चाहिए कि समय को प्रभावित करने वाली पत्रिका निकली । पत्रकारिता को बढ़ावा देने में, और साहित्य के प्रचार में इस शहर ने जो भूमिका निभाई है, मुझे बड़ी खुशी होगी कि यदि कारोबारी मसरुफियत के साथ साथ कुछ लोगों

को यह ख़्याल आये कि अपने संसाधनों का कुछ हिस्सा ऐसी बातों पर भी खर्च करें जो बजाहिर काम की चीजें नहीं होतीं। देखिए दुनिया में अकेला प्राणी इंसान ही है, जो कुछ ऐसे काम भी करना चाहता है जिनका कोई फायदा नहीं होता। मसलन सुबह बगीचे की सैर करना। फूलों को देखना, सूर्यास्त का दृश्य देखना। नदी को बहते हुए देखना । बच्चे की हंसी से खुश होना। युवा लड़के और लड़कियों को देखकर खुश होना कि ये हमारा भविष्य हैं। इतनी सारी चीजें इंसान की जान के साथ लगी हुई हैं। मेरा मानना है कि शहर में वह परंपरा पुनर्जीवित होनी चाहिए। मैं आप सभी का बेहद आभारी हूँ, और अब मैं ऐसे व्यक्ति के बारे में कुछ बातें आप से करूँगा जो मानवीय मूल्यों के हमारे ज़माने के सबसे बड़े प्रवक्ता हुए हैं । मैं इंतजार हुसैन के बारे में निजी बातें भी करूंगा । मेरे उनके ताल्लुकात लगभग चालीस बरसों में फैले हुए हैं।

इंतजार हुसैन 1965 में भारत छोड़ कर चले गए थे। वे पहली बार 1976 में भारत आए। उसी समय मुझसे मुलाकात हुई। फिर उन्होंने अगली यात्रा अपनी बेगम के साथ की। इसमें वह मेरे मेहमान भी रहे । और फिर वह दिन, और आज का दिन, इंतजार साहब की मौत से पहले जिस दिन वह अस्पताल में भर्ती हुए, इस महीने की दो तारीख को उनका निधन हुआ। अस्पताल में भर्ती होने से दो दिन पहले उन्होंने मुझे फोन किया और इस बात पर खुशी जताई कि वह दिल्ली आने का इरादा कर रहे हैं और मुझसे आग्रह किया कि मैं 'कराची लिटरेरी फेस्टिवल' में आ जाऊँ । मैं वहाँ नहीं जा सका और इंतजार साहब यहाँ नहीं आ सके। बहाने आप जानते हैं कुछ न कुछ बन जाते हैं। अभी क़ुरान की कुछ आयतों की तिलावत आपने सुनी। उसमें कुछ कहानियों का ज़िक्र आया है। इंतजार हुसैन ने एक कहानी लिखी है जिसका स्रोत ही क़ुरान है, बल्कि उन्होंने अपना तीसरा संग्रह, जिससे उनकी प्रतिष्ठा की शुरूआत होती है 'आखरी आदमी', इस संग्रह, के शुरू में उन्होंने क़ुरान के कुछ शब्द नकल किए हैं कि - कहानियां कहते रहो कि कुछ तो लोग समझें। कहानी हमारे यहाँ अंतर्दृष्टि और जागरूकता प्रशिक्षण का मुख्य स्रोत है। हमारे धार्मिक शास्त्रों, हमारे सूफियों के वचनों और हमारा बहुत सा अदब, इसका बहुत बड़ा केन्द्र रहा है। जातक, पंचतंत्र, मनजरी।

बहरहाल, अब मैं उनके बारे में कुछ बातें करता हूँ। देखिए इंतजार हुसैन को इंतजार हुसैन जिस अनुभव ने बनाया वह दर्दनाक अनुभव था। वह अनुभव उन्हें भारत विभाजन, होने वाले दंगों और भारत से इन्सानों के एक बहुत बड़े पलायन से हुआ। यही पाकिस्तान की ओर से भी हुआ। इंतजार हुसैन एक प्रवासी के तौर से यहाँ से निकले और पाकिस्तान चले गए। तो विभाजन और पलायन के अनुभव ने उर्दू को इस दौर के सबसे बड़े कथा लेखक दिए हैं। एक तो कुरअतुलएन हैदर, जिनका निधन 2008 में हुआ, जो हमारे समय की सबसे बड़ी अदबी हस्ती थीं और जिन्होंने उपन्यास के ज़रिये, कहानी के ज़रिये, इतिहास लेखन का काम अंजाम दिया 'आग का दरिया' जो हमारी चेतना में एक स्थायी स्थान प्राप्त कर चुका है, वह है एक तो। कुरअतुलएन हैदर और दूसरे इंतजार हुसैन। कुरअतुलएन हैदर और इंतजार हुसैन इन दोनों की कहानी, इन दोनों के कथा संसार, आज़ादी, विभाजन और पलायन के अनुभव की तह से शुरू होते हैं । तकसीम एक विचित्र घटना है, बड़ी घटना है । यहाँ कई लोग बैठे हुए हैं। बच्चे बैठे हैं। वे सब विभाजन के बहुत दिनों बाद पैदा हुए होंगे। लेकिन कुछ लोग शायद होंगे जिन्होंने अपनी आंखों से वह दृश्य देखा होगा । जाहिर है वह जितनी बड़ी घटना थी उतना बड़ा साहित्य हमारे यहाँ नहीं लिखा गया। लिखा जाना चाहिए था। टॉल्स्टॉय के उपन्यास 'युद्ध और शांति'

'जैसा बड़ा उपन्यास वुजूद में आना चाहिए था। लेकिन इसमें कोई शक कि नहीं जिस भाषा ने इस अनुभव को रचनात्मक स्तर पर सबसे ताकत के साथ बरता, वह उर्दू भाषा है। और वह भी शायद इसलिए कि उर्दू लेखकों का एक बहुत बड़ा वर्ग, उर्दू बोलने वालों के परिवार, हालांकि उर्दू मुसलमानों की भाषा नहीं है, केवल मुसलमानों की भाषा नहीं है, जैसे वाइकूम मोहम्मद बशीर जो मलयालम के सबसे बड़े अदीब हैं, उनकी भाषा मलयालम है, एक महिला रूकईया बेगम सलमा जिनका उपन्यास पिछले दिनों बहुत प्रसिद्ध हुआ, उनकी भाषा तमिल है, काज़ी नज़रुल इस्लाम की भाषा बंगाली है, बुल्ले शाह और शेख फरीद की भाषा पंजाबी है। तो कहने का मतलब यह है कि उर्दू तो उत्तर भारत के रहने वाले मुसलमानों और हिन्दुओं की भाषा है, एक समय तक दोनों में यह परंपरा आम रही। इसके निर्माण में, बनाने में, जो रोल मुसलमानों का रहा, उससे कम महत्वपूर्ण रोल हिंदुओं का नहीं रहा।

मुंशी प्रेमचंद के बारे में मौलवी अब्दुल हक़ ने, जो बाबाए उर्दू कहलाते हैं, यह कहा था उर्दू भाषा पर जितना बड़ा एहसान इस हिन्दू का है, हालांकि मुझे हिंदू मुसलमान शब्द बहुत अच्छे नहीं लगते जो भेदभाव पैदा करते हैं, लेकिन फिर भी, उन्होंने कहा कि उर्दू भाषा पर जो एहसान प्रेमचंद का है, वह कारनामा किसी मुसलमान के द्वारा अंजाम नहीं दिया जा सका। तो यह तो एक मामूली बात है। मुंशी दयानारायण निगम का 'जमाना' तो एक असाधारण रिसाला था और उसने जो रिवायत कायम की वह भी असामान्य है। हिंदी की एक लेखिका हैं कृष्णा सोबती, उन्होंने लिखा था विभाजन एक ऐसी घटना है जिसके बारे में चुप रहना संभव नहीं और कुछ कहना भी बहुत मुश्किल है। इसलिए कि वह एक अजीब घटना है । उसी घटना की तह से इंतजार हुसैन ज़ाहिर होते हैं। इंतजार हुसैन रहने वाले थे डिबाई के, जो बुलन्दशहर का एक छोटा सा कस्बा है। सोया सोया सा कस्बा, जब मैं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पढ़ाया करता था, कई बार मुझे वहाँ जाने का इत्तेफाक़ हुआ । वहां से करीब है वह कस्बा । जहां पैदा हुए थे इंतजार हुसैन। उनकी शिक्षा मेरठ में हुई। स्वतंत्रता के बाद जब यहां से मुसलमानों के कई काफिले पाकिस्तान जा रहे थे और वहाँ से हिंदू और सिखों के काफिले आ रहे थे, उसी रेले में इंतजार हुसैन भी लाहौर की तरफ बह गए और लाहौर जाकर वहीं ठहर गए। एक बार बात हो रही थी। मैंने पूछा इंतजार साहब मेरे कई जानने वाले परिवार कराची में हैं, आप ने लाहौर क्यों चुना। उन्होंने कहा, भई यहाँ की हवा याद आती है और दिल्ली में जो बादल बरसते हैं, वह हवा यहाँ तक भी आती है। वैसे भी, लाहौर शहर आप जाकर देखें, तो दिल्ली शहर से बहुत मिलता हुआ दिखाई देता है। इतिहास का साया इस शहर पर भी बहुत गहरा है। पुरानी इमारतों, मुगलों की बनाई हुई इमारतें और उर्दू को बढ़ावा देने का बहुत बड़ा केंद्र था लाहौर। पिछली सदी में 1874 में, जब नई नज्म की नींव पड़ी, तब से लेकर अब तक आधुनिक कविता, आधुनिक ग़ज़ल, आधुनिक कहानी, आधुनिक पत्रकारिता, इन सब का सबसे बड़ा केंद्र न दिल्ली है न लखनऊ बल्कि लाहौर है। और लाहौर में बीसवीं सदी का सबसे बड़ा उर्दू कवि, पंजाब ने हमें दिया, अल्लामा इकबाल, सबसे बड़े कहानीकार, सबसे प्रसिद्ध कहानीकार मंटो, बेदी, कृष्ण चंदर, उनका संबंध किसी न किसी रूप में लाहौर से, पंजाब से रहा। कहने का मतलब यह है कि इंतजार साहब भी लाहौर जाकर बस गए। लेकिन लाहौर में भी मानो कि अपना शहर ले गए थे। अपना कल्चर अपने साथ ले गए थे। पाकिस्तान की तहज़ीब में जो आम और रोज़मर्रा का जीवन दिखाई देता है, और हमारे आपके जीवन में एक काफी अंतर दिखाई देता है, और उसकी